नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305

इ-मेल: mgahvpro@gmail.com वेबसाइट : www.hindivishwa.org

विदेशी भाषाओं में बढ़ रहे है रोजगार के अवसर
विदेशी विद्यार्थियों के लिए वर्धा बना है आकर्षण का केंद्र
चीनी भाषा के सहायक प्रोफेसर अनिर्बाण घोष से वार्तालाप

वर्धा, 11 जुलाई 2017: दस साल पहले वर्धा शहर में पहलीबार फ्रेंच, स्पैनिश एवं चीनी इन विदेशी भाषाओं का अध्ययन महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा शुरु किया गया। आज तक विदेशी भाषाओं का अध्ययन पूरा कर यहां से अनेक विद्यार्थियों को रोज़गार प्राप्त हुआ है। विदेशी विद्यार्थियों के वर्धा एक पसंद और आकर्षण का केंद्र बन गया है । उक्त जानकारी विश्वविद्यालय में चीनी भाषा के सहायक प्रोफेसर अनिर्बाण घोष ने दी।

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय परिसर में जगह न होने के कारण शहर की न्यु आर्ट्स कॉलेज में अस्थायी रूप से चालु किया गया था, जिसके लिए प्राचार्य आर.जी.भोयर एवं वर्तमान विधायक पंकज भोयर ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। शुरुआत की दौर में शहर की विभिन्न शिक्षा प्रतिष्ठान जैसे यशवंत कॉलेज, जी.एस. कॉमर्स एवं साइंस कॉलेज, सेवाग्राम मेडिकल कॉलेज, शिक्षा मण्डल, अग्निहोत्री शिक्षा संस्थान आदि के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने काफी रूची दिखायी। आसपास के शहर जैसे नागपुर, हिंगनघाट, यवतमाल, अमरावती, सातारा, चंद्रपुर, पुलगाव जैसे स्थानों के विद्यार्थियों ने यहां से विदेशी भाषा का अध्ययन किया है।

विदेशी भाषाओं में रोजगार की संभावनाओं पर उन्होंने बताया कि भारत में पहलीबार विदेशी भाषाओं का हिंदी माध्यम से शिक्षण वर्धा में शुरू किया गया। इसका उद्देश्य यही था कि हिंदी एवं विदेशी भाषाओं के बीच संवाद की संभावनाओं का अन्वेषण, भाषा के क्षेत्र में रोजगार के उपलब्ध अवसरों के लिए हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करना एवं विदेशों में हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करना। वर्तमान में फ्रेंच,स्पैनिश, चीनी एवं जापानी भाषाओं में सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, प्रगत डिप्लोमा अत्यंत लोकप्रिय है। साथ ही शोध की दृष्टि से चीनी एवं स्पैनिश भाषा में एम.फिल. पाठ्यक्रम एवं स्पैनिश भाषा में एच.डी. भी संचालित है। सितंबर, 2015 में भोपाल में आयोजित दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन में भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने विश्व में हिंदी भाषा के बढ़ते हुए महत्त्व का उल्लेख किया था। इस विश्व हिंदी सम्मेलन में भारत में विदेशी भाषा प्रशिक्षण हेतु अध्ययन की सुविधा प्रारम्भ करने पर जोर दिया गया था। इन पाठ्यक्रमों में दीक्षित विद्यार्थी विभिन्न संस्थानों एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियों में अनुवादक आदि पदों पर नियुक्त हो रहे हैं। साथ ही संबंधित भाषा में उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु देश-विदेश में स्थित विश्वविद्यालयों में प्रवेश ले रहे हैं। विदेशी भाषा के जानकार विद्यार्थी के लिए वर्तमान में पर्यटन क्षेत्र एवं

कोर्पोरेट जगत में रोजगार की पर्याप्त सम्भावनाएँ हैं। विदेशी भाषा में शिक्षित विद्यार्थी विभिन्न संस्थाओं, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों, शिक्षण संस्थानों, द्विभाषिकों एवं अनुवादक के रूप में देश-विदेश में कार्य कर रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय संबंध और विदेशी भाषाओं के रिश्ते के बारे में उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का योगदान आर्थिक-वाणिज्यिक-राजनैतिक स्तरों पर बढ़ रहा है। लैटिन अमेरिकी देशों, विशेष रूप से ब्राजील के साथ भारत का संपर्क बहुत मजबूत हुआ है। यूरोपियन यूनियनमें स्पेन पाँचवा महत्त्वपूर्ण देश है। लैटिन अमेरिका एवं कैरिबियन देशों से भारतीय संस्कृति का बहुत पुरानानाता है जो भारत के अन्य देशों के साथ संबंध को मजबूत बनाताहै।

उन्होंने कहा कि भारत और चीन दोनों देशों की सभ्यताएँ प्राचीन हैं और दोनों ही देश ऐतिहासिक दृष्टि से समृद्ध भी हैं। भारत और चीन के मध्य पारस्परिक संबंध को मजबूत बनाने के लिए दोनों देशों के दार्शनिकों एवं बुद्धिजीक्यिों ने भाषा के ज्ञान को विशेष महत्त्व दिया है। चीन और भारत के बीच व्यापार संपर्क लगातार मजबूत होता जा रहा है। भारत में चीनी निवेश और चीन में भारतीय कंपनियों के निवेश के कारण भारत में चीनी भाषा के शिक्षण एवं चीन में हिंदी भाषा-शिक्षण को बहुत महत्त्व दिया जा रहा है। पिछले दो दशकों में भारत-चीन के बीच व्यापार संबंध बहुत प्रगाढ़ हुए हैं जिसके कारण चीनी भाषा जानने वालों के लिए रोजगार के क्षेत्र में विशेष सम्भावनाएँ हैं। पिछले दस साल में सबसे ज्यादा विदेशी विद्यार्थी चीन से इस विश्वविद्यालय में पढ़ने आए है और यहां से भी भारतीय विद्यार्थी चीन में गए।

चीनी के अलावा जापानी और फ्रेंच भाषा को लेकर उनका कहना है कि भारत और जापान के धार्मिक, सांस्कृतिक, व्यापारिक, राजनैतिक एवं आर्थिक संबंध सदियों पुराने हैं और इसमें बौद्धधर्म की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वर्तमान में व्यापारियों, बुद्धिजीवियों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों का एक बड़ा समूह जापानी भाषा की ओर आकृष्ट हो रहा है और इस भाषा को सीख रहा है।

लोकप्रियता एवं व्यावसायिक दृष्टि से फ्रेंच भारत में सर्वाधिक सीखी जाने वाली विदेशी भाषा है। फ्रेंच भाषा का शिक्षण भारत में 1980 से ही चल रहा है। फ्रेंच के प्रति लोगों की रुचि निरन्तर बढ़ती ही जा रही है क्योंकि यह न केवल फ्रांस में बल्कि अन्य देशों जैसे कनाडा, स्विजरलैंड, बेल्जियम, मॉरीशस और अफ्रीका महाद्वीप के फ्रांकोफोन देशों में भी बहुसंख्यक लोगों द्वारा बोली जाती है। फ्रांस के दर्शन, साहित्य, कला, सिनेमा एवं संस्कृति परभी भारतीय अधिकाधिक रुचि प्रकट कर रहे हैं।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा हिन्दी माध्यम में इन विदेशी भाषाओं के अध्ययन-अध्यापन कार्य प्रारम्भ किए जाने से पहले तक अन्य संस्थानों द्वारा इन भाषाओं को सीखने-सिखाने का माध्यम सामान्यत: अंग्रेजी भाषा ही रहा है। आज भारत पूरी दुनिया में अपनी विशेष पहचान बना रहा है। इस कारण हिंदी भाषा का ज्ञान विदेशियों के लिए और विदेशी भाषाओं का ज्ञान भारतीयों के लिए आवश्यक हो गया है। विगत कुछ दशकों में वित्त, व्यवसाय, विपणन आदि क्षेत्रों में भारत और अन्य देशों के मध्य सम्बन्ध अपेक्षाकृत प्रगाढ़ हुए हैं। ऐसे परिदृश्य में विदेशी भाषाएँ सीखने से युवाओं, महिलाओं एवं सेवानिवृत्त व्यक्तियों को रोजगार के अनेक अवसर प्राप्त हुए हैं। इस लिए सभी विदेशी भाषाओं में बी.ए. एवं एम. ए. का अध्ययन अनिवार्य रूप से शुरु किया जाना चाहिए। वर्तमान परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए एवं विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भविष्य में विदेशी भाषाओं में उच्चतर शिक्षा शुरु करना होगा। भविष्य में सम्पूर्ण मध्य भारत में हिंदी माध्यम से विदेशी

भाषाओं को सीखने-सिखाने के लिए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

विदेशी भाषाओं से संबंधित कुछ अन्य महत्वपूर्ण बातें :

- ✓ चीन के लगभग दस विश्वविद्यालयों से अपने विश्वविद्यालय का अकादमिक संबंध स्थापित हुआ है।
- ✓ चीन, जापान, स्पेन एवं फ्रांस के विद्वानों के समय-समय पर वर्धा आगमन पर विभिन्न संगोष्ठियों, विशिष्ट व्याख्यानों एवं महत्त्वपूर्ण कार्यशालाओं का आयोजन हुआ है ।
- ✓ वर्ष 2017 में फ्रांस के 'इनाल्को पेरिस' एवं चीन गण प्रजातन्त्र के 'पेईचिङ फॉरेन स्टडीज़ विश्वविद्यालय' के साथ अकादमिक अनुबंध (MoU) पर हस्ताक्षर हुए हैं।
- ✓ निरन्तर पिछले पाँच वर्षों में वर्धा विश्वविद्यालय के दस से अधिक विद्यार्थी चीन के विभिन्न विश्वविद्यालयों में चीनी भाषा का अध्ययन करने हेतु गए हैं।
- ✓ विदेशी भाषा का अध्ययन करने से पिछले पाँच वर्षों में वर्धा विश्वविद्यालय के तीस से अधिक विद्यार्थियों को रोजगार का अवसर मिला है।
- ✓ चीन के षन याङ नॉर्मल विश्वविद्यालय एवं नॉर्थ-वेस्ट विश्वविद्यालय के उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमण्डल का कैरियर काउंसलिंग के उद्देश्य से चीन से वर्धा विश्वविद्यालय में आगमन।
- ✓ पिछले कई वर्षों से हिंदी विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने जापानीज़ लैंगवेज प्रॉफिसियेंसी टेस्ट (JLPT) परीक्षा में उत्साहपूर्वक सहभागिता की है। इस साल कुछ विद्यार्थियों को पुने विश्वविद्यालय में जापानी भाषा में बी.ए. ऑनर्स पाठ्यक्रम में चयन हुआ है।
- ✓ दिनांक 17 अप्रैल, 2017 को विदेश मंत्रालय के दिल्ली स्थित कार्यालय में भारत की माननीय विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज के साथ वर्धा विश्वविद्यालय के कुलपति, विदेशी भाषा के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की भेंट हुई जिसमें विदेशी भाषा अध्ययन की आवश्यकता एवं चुनौतियाँ के संदर्भ में चर्चा की गई।
- ✓ हाल ही में चीनी भाषा सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम में अध्ययनरत दो विद्यार्थियों को चीनी भाषा व संस्कृति कार्यशाला कार्यक्रम "षाङहाई सामर स्कुल 2017" (3 – 28 जुलाई, 2017) में चयन हुआ है और अभी वे दोनो विद्यार्थी षाङहाई में अध्ययनरत है।